खान पान

अवध क्षेत्र की अपनी एक अलग खास नवाबी खानपान शैली है। इसमें विभिन्न तरह की बिरयानीयां, कबाब, कोरमा, नाहरी कुल्चे, शीरमाल, जर्दा, रुमाली रोटी और वर्की परांठा और रोटियां आदि शामिल हैं, जिनमें काकोरी कबाब, गलावटी कबाब, पतीली कबाब, बोटी कबाब, घुटवां कबाब और शामी कबाब लाजवाब हैं। लखनऊ शहर में जहां एक ओर 1804 में स्थापित राम आसरे हलवाई की मक्खन मलाई एवं मलाई-गिलौरी है, वहीं अकबरी गेट पर मिलने वाले हाजी मुराद अली के टुण्डे के कबाब हैं। अभी और भी है जनाब अन्य नवाबी पकवान जैसे 'दमपुख्त', लच्छेदार प्याज और हरी चटनी के साथ परोसे गय सीख-कबाब और रुमाली रोटी का भी जवाब नहीं ।

रहन सहन

अवध में कला और संस्कृति का संगम उसके परिधानों में भी मिलता है । इसमें सबसे खास है सनबादवू की चिकनकारी घ महीन कपड़े पर सुई-धागे से विभिन्न टांकों द्वारा की गई हाथ की कारीगरी लखनऊ की चिकन कला कहलाती है इसी विशिष्टता के कारण ही यह कला सैंकड़ों वर्षों से अपनी लोकप्रियता बनाए हुए है।

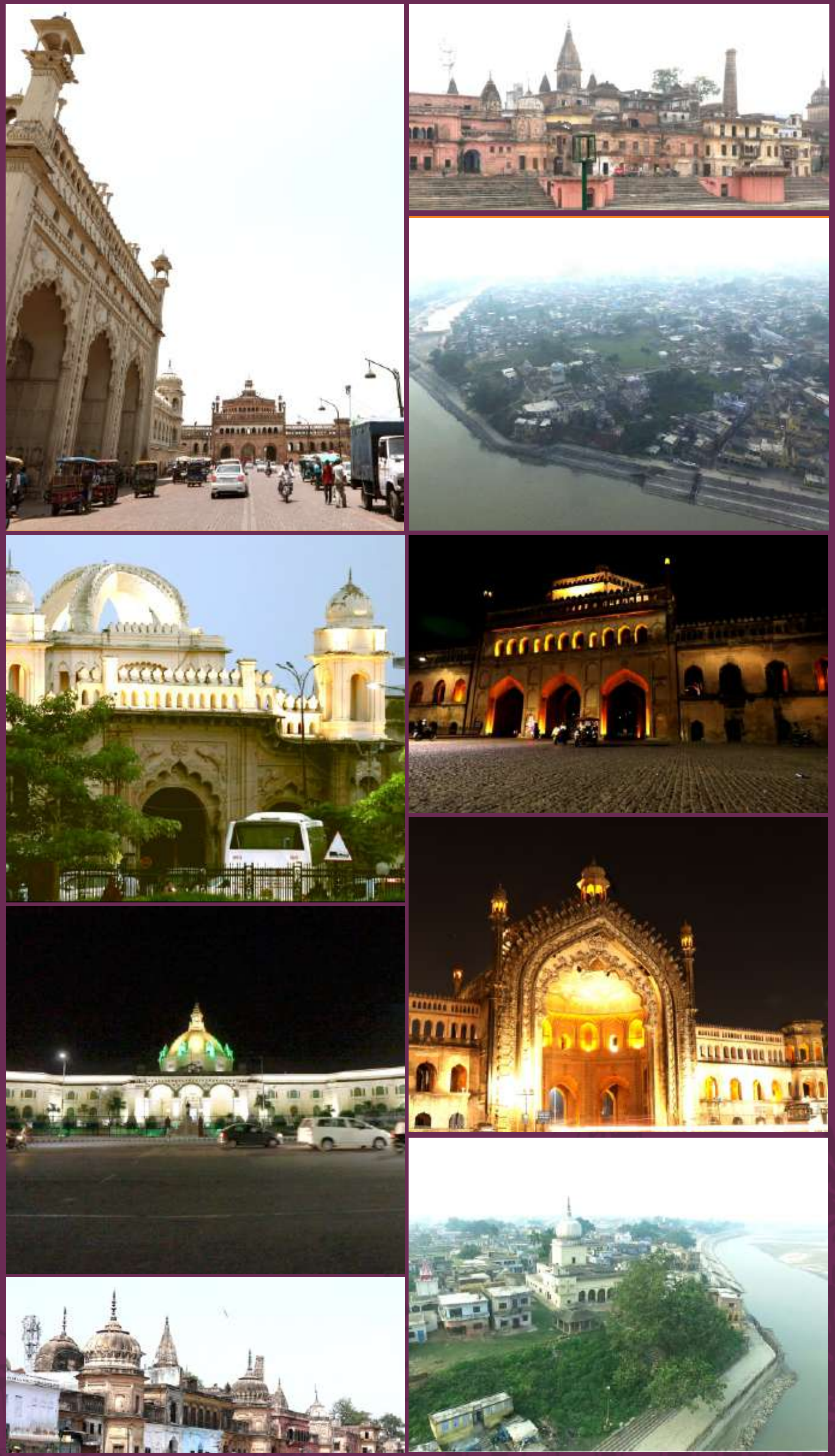

Content Writer - Swarnika Pandey | Surya Saxena
Design - Amardeep Sharma
Production - IMAGE & CREATION
✆ 0522 4000344 🌐 www.imagencreation.com
✉ imagecreation08@gmail.com

डाक्यूमेंट्री फिल्म

सांस्कृतिक क्षेत्र

अवध

संस्कृति विभाग
उत्तर प्रदेश

अवध की संस्कृति

उत्तर प्रदेश का अवध क्षेत्र, राम की ये पावन जन्म भूमि , गंगा जमुनी तेहजीब का अनोखा संगम है, एक तरफ जहाँ नवाबी तमीज ओ तहजीब है, तो दूसरी तरफ राम भक्ति में रची बसी अयोध्या की संस्कृति ।

लखनऊ

लखनऊ अपनी विरासत में मिली संस्कृति को आधुनिक जीवनशैली के संग बड़ी सुंदरता के साथ संजोये हुए है। भारत के उत्कृष्टतम शहरों में गिने जाने वाले लखनऊ की संस्कृति में भावनाओं की गर्माहट के साथ उच्च श्रेणी का सौजन्य एवं प्रेम भी है। लखनऊ के समाज में नवाबों के समय से ही “पहले आप!“ वाली शैली समायी हुई है । यह कि गंगा जमुनी तहजीब लोगों को एक समान संस्कृति में बांधती है। ये संस्कृति यहां के नवाबों के समय से चली आ रही है । लखनवी पान यहां की संस्कृति का अभिन्न अंग है जिसके बिना लखनऊ अधूरा लगता है।

अयोध्या

अयोध्या घाटों और मंदिरों की प्रसिद्ध नगरी है, यहाँ से होकर बहती सरयू नदी के किनारे १४ प्रमुख घाट हैं। इनमें गुप्तद्वार घाट, कैकेयी घाट, कौशल्या घाट, पापमोचन घाट, लक्ष्मण घाट आदि उल्लेखनीय हैं। मंदिरों में ‘कनक भवन‘ सबसे सुंदर है। लोकमान्यता के अनुसार कैकेयी ने इसे सीता को मुंह दिखाई में दिया था।

संगीत एवं नृत्य

लखनऊ तबला घराना

लखनऊ घराना, जिसे “पुराना घरना“ भी कहा जाता है, वह छह मुख्य घराना या तबला में शैलियों में से एक है। यह हथेली के पूर्ण उपयोग, उंगलियों का प्रयोग गूंजने वाली आवाजें, और दायां या ट्रबल ड्रम पर अंगूठी और छोटी उंगलियों का उपयोग इसकी विशेषता है।

कथक

अवध केंद्र रहा है, शास्त्रीय संगीत और नृत्य कलाओं का यहाँ का भातखण्डे संगीत सम विश्वविद्यालय, हर प्रकार कि सांस्कृतिक विधा को संरक्षित करता है साथ ही उसका प्रसार प्रचार कर नयी पीढ़ी को उसे जोड़ता है, यहां शास्त्रीय और लोक दोनों विधाओं में गायन, वादन एवं नृत्य का प्रशिक्षण दिया जाता है। ऐसा माना जाता है की प्रसिद्ध भारतीय नृत्य कथक ने अपना स्वरूप अवध से ही पाया । अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह कथक के बहुत बड़े ज्ञाता एवं प्रेमी थे द्य लखनऊ घराने की शैली के कथक नृत्य में सुंदरता, अदायगी और प्राकृतिक संतुलन है।

फरवाही नृत्य

अवध की लोक नृत्य शैली में प्रमुख है फरवाही नृत्य, इस नृत्य में एक साथ कई युवक लाठी के माध्यम से अपनी कला का प्रदर्शन करके भगवान राम का गुणगान करते हैं ।

नौटंकी

नौटंकी अत्यंत ही लोकप्रिय और प्रभावशाली लोककला है। यह लोककला जनमानस के मन से भीतर तक जुड़ी हुई है। नौटंकी को गाँवों वालों के लिए जानकारी प्रदान करने, सामाजिक कुरीतियों से परिचित कराने और सस्ता किंतु स्वस्थ मनोरंजन का ज्ञानवर्धक और मनोरंजक साधन माना जाता है। नौटंकी की कानपुर-शैली से जुड़ा सबसे खास नाम है नौटंकी क्वीन गुलाब बाई जिन्होंने डांस, डायलाग, म्यूजिक, रोमांस, ह्यूमर, मैलोड्रामा में फ्यूजन का प्रयोग कर थियेटर की दुनियाँ में नाम कमाया और लोगों का मनोरंजन किया

रामलीला

अवध की रामलीला का मूलाधार गोस्वामी तुलसीदास कृत “रामचरितमानस“ है परम्परागत रूप से राम के चरित और उनकी लीलाओं पर आधारित ये लोक नाट्य कला अवध की संस्कृति का अभिन्न अंग है, पूरे देश में प्रचलित अयोध्या में होने वाली राम लील देश के विभिन्न हिस्सों में अलग अलग प्रकार से प्रदर्शन किये जाते है। ।